

	के प्रति सजगता।
— 13 —	- १३ -
Thought Can Never Be Free	विचार कभी स्वतंत्र नहीं हो सकता
So we must understand very clearly that our thinking is the response of memory, and memory is mechanistic. Knowledge is ever incomplete, and all thinking born of knowledge is limited, partial, never free. So there is no freedom of thought. But we can begin to discover a freedom, which is not a process of thought, and in which the mind is simply aware of all its conflicts and of all the influences impinging on it.	अतः हमको यह स्पष्टतः समझ लेना चाहिए कि हमारे विचार स्मृति का प्रत्युत्तर होते हैं और स्मृति यंत्रवत् होती है। ज्ञान सदैव अपूर्ण रहता है और इसीलिए इससे उपजी सारी विचारणा सीमित व आंशिक रहती है, कभी स्वतंत्र नहीं होती। अतः विचार की कोई स्वतंत्रता नहीं होती। परंतु हम ऐसी स्वतंत्रता का अन्वेषण आरंभ कर सकते हैं जो विचार की प्रक्रिया न हो और जिसमें मन अपने समस्त द्वंद्वों और अतिक्रमण कर रहे समस्त प्रभावों के प्रति केवल सजग रहे।
CHAPTER. FOUR	अध्याय चार
Insight, Intelligence, and Revolution in Your Life	अंतर्दृष्टि, प्रज्ञा एवं जीवन में क्रांति
-1-	- १ -
Intellect Is not Intelligence	बौद्धिकता प्रज्ञा नहीं होती
Training the intellect does not result in intelligence. Rather, intelligence comes into being when one acts in perfect harmony, both intellectually and emotionally. There is a vast distinction between intellect and intelligence. Intellect is merely thought functioning independently of emotion. When intellect, irrespective of emotion, is trained in any particular direction, one may have great intellect, but one does not have intelligence, because in intelligence there is the inherent capacity to feel as well as to reason; in intelligence both capacities are equally present, intensely and harmoniously.	बौद्धिकता को दिया गया प्रशिक्षण उसे प्रज्ञा नहीं बना देता। बल्कि प्रज्ञा तब आती है जब व्यक्ति परिपूर्ण सामंजस्य में जीता है--बौद्धिक और भावनात्मक दोनों रूप से। बौद्धिकता और प्रज्ञा में बड़ा अंतर है। बौद्धिकता तो भावनात्मकता से पृथक केवल विचार का कार्यकलाप है। भावना की उपेक्षा करके बौद्धिकता को किसी दिशा विशेष के लिये प्रशिक्षित किये जाने पर किसी के पास अत्यधिक बुद्धि तो आ सकती है परंतु प्रज्ञा नहीं, क्योंकि प्रज्ञा में अनुभूति की क्षमता और बौद्धिक-तार्किक क्षमता दोनों अंतर्निहित होती हैं, उसमें ये दोनों क्षमतायें प्रबलतः, सामंजस्यपूर्ण ढंग से व समान रूप से विद्यमान रहती हैं।
Now modern education is developing the intellect, offering more and more explanations of life, more and more 11	अब आधुनिक शिक्षा बुद्धि का विकास कर रही है, जीवन की अनेकानेक व्याख्याएं, अधिकाधिक मत-सिद्धांत प्रस्तुत कर रही है, परंतु इस सब

<p>icories, without the harmonious quality of affection. Therefore we have developed cunning minds to escape from conflict; hence we are satisfied with explanations that scientists and philosophers give us. The mind—the intellect—is satisfied with these innumerable explanations, but intelligence is not, for to understand there must be complete unity of mind and heart in action...</p>	<p>में प्रेम का सामंजस्यी गुण नदारद है। इसलिये हमने द्वंद्व से बचने के लिये चालाक मन बना लिये हैं और इस तरह, वैज्ञानिकों व दार्शनिकों द्वारा दी गई व्याख्याओं से स्वयं को संतुष्ट कर लिया है। यह मन, यह बुद्धि इन असंख्य व्याख्याओं से संतुष्ट हैं परंतु प्रज्ञा संतुष्ट नहीं है, क्योंकि समझ के लिये आवश्यक है कि कार्य-व्यवहार के दौरान मन और हृदय पूर्णतया एकाकार रहें ...</p>
<p>Until you really approach all of life with your intelligence, instead of merely with your intellect, no system in the world will save man from the ceaseless toil for bread.</p>	<p>जब तक संपूर्ण जीवन को हम वास्तव में बुद्धि मात्र के बजाय प्रज्ञा से नहीं देखेंगे तब तक संसार की कोई भी पद्धति-प्रणाली मानव को मात्र रोटी के लिये कोल्हू का बैल बने रहने से बचा नहीं सकती।</p>
<p>-2-</p>	<p>- २ -</p>
<p>Intelligence, Awareness May Burn Away the Problems</p>	<p>प्रज्ञा, जागरूकता समस्या का अवसान कर सकते हैं</p>
<p>All thinking obviously is conditioned; there is no such thing as free thinking. Thinking can never be free, it is the outcome of our conditioning, of our background, of our culture, of our climate, of our social, economic, political background. The very books that you read and the very practices that you do are all established in the background, and any thinking must be the result of that background. So if we can be aware—and we can go presently into what it signifies, what it means, to be aware—perhaps we shall be able to uncondition the mind without the process of will, without the determination to uncondition the mind. Because the moment you determine, there is an entity who wishes, an entity who says, "I must uncondition my mind." That entity itself is the outcome of our desire to achieve a certain result, so a conflict is already there. So, is it possible to be aware of our conditioning, just to be aware?—in 'which there is no conflict at all. That very awareness, if allowed, may perhaps burn away the problems.</p>	<p>यह स्पष्ट है कि सारी सोच सापेक्ष है। स्वतंत्र सोच जैसी कोई चीज़ नहीं होती। सोचना कभी स्वतंत्र नहीं हो सकता। यह वातावरण के अनुसार हमारे ढल जाने, हमारी पृष्ठभूमि, हमारी संस्कृति, जलवायु, हमारी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक पृष्ठभूमि की उपज होती है। वे पुस्तकें जो अपने पढ़ी हैं, वे आचरण जिन पर आप चले हैं आपकी पृष्ठभूमि के आधार हैं और आपकी प्रत्येक सोच इसी पृष्ठभूमि का परिणाम होती है। तो यदि हम सजग हो जाएं और तत्काल यह भी समझ लें कि इस सजग होने का अभिप्राय क्या है, अर्थ क्या है—तो शायद हम मन को पूर्व प्रभावों से मुक्त कर सकते हैं और वह भी इसकी इच्छा या संकल्प के प्रपंच में पड़े बिना। क्योंकि जिस पल आप यह संकल्प लेंगे तभी एक सत्ता अस्तित्व में आ जाएगी और कहेगी "मुझे अपने मन को पूर्ण प्रभावों से मुक्त करना चाहिये।" और यह सत्ता कुछ परिणाम पा लेने की हमारी इच्छा की ही उपज होती है। इस प्रकार एक द्वंद्व तो पहले ही बीच में आ कूदता है। तो अपने पूर्व प्रभावों के प्रति सजग हो जाना, केवल सजग हो जाना क्या संभव है?—जिसमें किसी प्रकार का कोई द्वंद्व न हो। यही सजगता, यदि इसे आने दिया जाए,</p>

	संभवतः समस्याओं को ध्वस्त कर सके।
-3-	- ३ -
Understanding Comes when the Brain Is Quiet	जब मस्तिष्क शांत हो तब आती है समझ
Now, when do you understand, when is there understanding? I do not know if you have noticed that there is understanding when the mind is very quiet, even for a second; there is the flash of understanding when verbalization of thought is not. Just experiment with it and you will see for yourself that you have the flash of understanding, that extraordinary rapidity of insight, when mind is very still, when thought is absent, when the mind is not burdened with its noise. So, the understanding of anything—of a modern picture, of a child, of your wife, of your neighbor, or the understanding of truth which is in all things—can only come when the mind is very still. But such stillness cannot be cultivated because if you cultivate a still mind, it is not a still mind, it is a dead mind.	आप कब समझ पाते हैं, समझ कब आती है? मैं नहीं जानता कि आप लोगों ने इस पर कभी ध्यान दिया है या नहीं कि समझ तभी आती है जब मन बहुत शांत होता है--चाहे वह पल भर के लिये ही हो। जब विचारों का कोलाहल न हो, तब समझ की कौंध होती है। तनिक यह प्रयोग करके देखें और आप स्वयं पाएंगे कि जब मन एकदम निश्चल हो, जब उसमें विचारों की विद्यमानता न हो, उनके कोलाहल से मन बोझिल न हो, तब समझ की एक दमक, अंतर्दृष्टि की एक असाधारण द्रुतगति आपको अनुभूत होगी। इस प्रकार किसी के भी बारे में समझ चाहे वह आधुनिक चित्रकला के बारे में हो, किसी बालक, अपनी पत्नी, अपने पड़ोसी के बारे में हो या प्रत्येक वस्तु में विद्यमान सत्य के बारे में हो, यह समझ तभी आ सकती है जब मन नितांत शांत हो। परंतु मन के इस मौन, निश्चलता का संवर्धन नहीं किया जा सकता क्योंकि यदि आप निश्चल मन को संवर्धित करेंगे, तब वह संवर्धित मन निश्चल मन नहीं होगा, वह तो मृत मन होगा।
It is essential to have a still mind, a quiet mind, in order to understand, which is fairly obvious to those who have experimented with all this. The more you are interested in something, the more your intention to understand, the more simple, clear, free the mind is Then verbalization ceases. After all, thought is word, and it is the word that interferes. It is the screen of words, which is memory, that intervenes between the challenge and the response. It is the word that is responding to the challenge, which we call intellection. So, the mind that is chattering, that is verbalizing, cannot understand truth—truth in relationship, not an abstract truth. There is no abstract	जिन लोगों ने इस सब पर प्रयोग किये हैं उन लोगों को यह बात पर्याप्त स्पष्ट हो गई है कि समय के लिये एक शांत मन, एक निश्चल मन अनिवार्य है। जिस चीज़ में आप जितनी अधिक रुचि लेते हैं, उतनी ही अधिक उसे समझ लेने की आपकी दक्षिणता बढ़ती जाती है, मन उतना ही सरल, स्पष्ट और मुक्त होता जाता है। तब शब्दों का कोलाहल थम जाता है। आखिर विचार शब्द ही तो हैं और यह शब्द ही है जो हस्तक्षेप करता है। स्मृति रूप में यह शब्द-पट ही है जो किसी चुनौती और उसके प्रत्युत्तर में की जा रही क्रिया के बीच आ कूदता है। यह शब्द ही है जो चुनौती का प्रत्युत्तर देता है जिसे हम बौद्धिक-प्रक्रिया कहते हैं। इस प्रकार वह मन जो अनर्गल प्रलाप कर रहा है, जो शब्दों का कोलाहल कर

<p>truth. But truth is very subtle. It is the subtlety that is difficult to follow. It is not abstract. It comes so swiftly, so darkly, it cannot be held by the mind. Like a thief in the night, it comes darkly, not when you are prepared to receive it. Your reception is merely an invitation of greed.</p>	<p>रहा है--वह सत्य को नहीं समझ सकता, सैद्धांतिक सत्य नहीं बल्कि संबंधों के सत्य को। सैद्धांतिक सत्य जैसी कोई चीज़ नहीं होती। सत्य तो अत्यंत सूक्ष्म होता है उसकी यह सूक्ष्मता ही है जिसका अनुसरण कठिन है। यह सैद्धांतिक नहीं है। यह इतनी द्रुत गति से, इतने गुपचुप तरीके से आता है कि मन इसे पकड़ नहीं पाता। रात में किसी चोर की तरह यह चुपके से आता है न कि तब, जब आप इसका स्वागत करने को तैयार बैठे हों। आपके द्वारा किया जाने वाला स्वागत तो केवल लोभमय निमंत्रण है।</p>
<p>So, a mind that is caught in the net of words cannot understand truth.</p>	<p>तो वह मन जो शब्द जंजाल में उलझा हुआ हो, सत्य को नहीं समझ सकता।</p>
<p>-4-</p>	<p>- ४ -</p>
<p>Intelligence Is Crippled by Analysis</p>	<p>विश्लेषण प्रज्ञा को अपंग बना देता है।</p>
<p>The very first thing to do, if I may suggest it, is to find out why you are thinking in a certain way, and why you are feeling in a certain manner. Don't try to alter it, don't try to analyze your thoughts and your emotions; but become conscious of why you are thinking in a particular groove and from what motive you act. Although you can discover the motive through analysis, although you may find out something through analysis, it will not be real; it will be real only when you are intensely aware at the moment of the functioning of your thought and emotion; then you will see their extraordinary subtlety, their fine delicacy. So long as you have a "must" and a "must not," in this compulsion you will never discover that swift wandering of thought and emotion. And I am sure you have been brought up in the school of "must" and "must not" and hence you have destroyed thought and feeling. You have been bound and crippled by systems, methods, by your teachers. So leave all those "must" and "must not." This does not mean that there shall be licentiousness, but become aware of a</p>	<p>सबसे पहले तो मुझे लगता है यह पता लगाया जाए कि आप एक खास तरीके से क्यों सोच रहे हैं और एक खास ढंग से क्यों महसूस कर रहे हैं। उसे बदलने का प्रयास मत करें, अपने विचारों और भावनाओं का विश्लेषण करने का प्रयास भी न करें, केवल सजग हों कि क्यों तो आप एक विशेष ढर्रे में सोचते हैं और कोई भी कार्य किस प्रयोजन से करते हैं। यद्यपि विश्लेषण करके आप प्रयोजन ढूंढ सकते हैं परंतु वह वास्तविक प्रयोजन नहीं होगा। वास्तविक प्रयोजन का तभी पता चलेगा जब किसी विचार या भावना के चलते आप अत्यंत सजग बने रहें। तब आप उनकी असाधारण सूक्ष्मता, उनकी असाधारण सुकुमारता को देख पाएंगे। जब तक आपमें 'यह करना चाहिए' और 'यह नहीं करना चाहिए' की धारणा विद्यमान है, तब तक इस बाध्यता के कारण आप विचारों और भावनाओं के उस द्रुत आवागमन को जान नहीं सकते। और निश्चित ही आपका लालन-पालन इसे 'करना चाहिए' और 'नहीं करना चाहिए' की शिक्षा-दीक्षा में हुआ है। इसीलिए आपने विचार और भावना का गला घोट दिया है। रीति-रिवाजों, तौर-तरीकों और अपने गुरुओं द्वारा आप बेड़ियों में जकड़ दिये गये हैं, पंगु बना दिये गये हैं। इसलिए इन तमाम 'करना चाहिए'</p>

<p>mind that is ever "saying, "I must," and "I must not." Then as a flower blossoms forth of a morning, so intelligence happens, is there, functioning, creating comprehension.</p>	<p>और 'नहीं करना चाहिए' के सारे बखेड़ों को विदा कर दें। इसका अर्थ यह नहीं है कि आप में स्वेच्छाचारिता आ जाए, बल्कि जरूरी यह है कि उस मन के प्रति सजगता रहे जो कहता रहता है कि "मुझे यह करना चाहिए", "मुझे यह नहीं करना चाहिए"। तब प्रज्ञा का प्रस्फुटन ऐसे होता है जैसे प्रभात की बेला में फूल खिल जाता है, तब प्रज्ञा विराजित होकर अपना कार्य करती है, सूझबूझ विकसित करती जाती है।</p>
<p>-5-</p>	<p>- ५ -</p>
<p>Freedom from the Self</p>	<p>अहं से मुक्ति</p>
<p>To free the mind from all conditioning, you must see the totality of it without thought. This is not a conundrum; experiment with it and you will see. Do you ever see anything Without thought? Have you ever listened, looked, without bringing in this whole process of reaction? You will say that it is impossible to see without thought; you will say no mind can be unconditioned. When you say that, you have already blocked yourself by thought, for the fact is you do not know.</p>	<p>मन को इसके समस्त पूर्वप्रभावों से मुक्त करने के लिये आप निर्विचार होकर इसे संपूर्णतः देखिए। यह कोई पहेली नहीं है। इसे आप प्रयोग रूप में करके ही जान पाएंगे। क्या आप किसी भी चीज़ को बिना किसी विचार के कभी देख पाते हैं? प्रतिक्रिया करने की इस सारी प्रक्रिया को बीच में लाये बिना क्या आपने कुछ सुना या देखा है। आप कहेंगे कि निर्विचार होकर देखना असंभव है, आप यह भी कहेंगे कि कोई भी मन पूर्वप्रभावों से, संस्कारों से ग्रस्त हुए बिना नहीं रह सकता। जब आप ऐसा कहते हैं तब आप विचार द्वारा स्वयं को पहले ही अवरुद्ध कर चुके होते हैं, क्योंकि तथ्य यह है कि आप जानते ही नहीं।</p>
<p>So can I look, can the mind be aware of its conditioning? I think it can. Please experiment. Can you be aware that you are a Hindu, a Socialist, a communist, this or that, just be aware without saying that it is right or wrong? Because it is such a difficult task just to see, we say it is impossible. I say it is only when you are aware of this totality of your being Without any reaction that the conditioning goes, totally, deeply—which is really the freedom from the self.</p>	<p>तो क्या मैं यह देख सकता हूँ, क्या मन अपने पूर्वप्रभावों के प्रति भिन्न हो सकता है? मेरे विचार से ऐसा हो सकता है। कृपया इस पर प्रयोग करके देखें। इसे सही या गलत ठहराए बिना कि आप एक हिंदू हैं या एक समाजवादी हैं, कम्युनिस्ट हैं, यह या वह हैं--क्या आप इसके प्रति केवल सजग हो सकते हैं? चूंकि मात्र देखना इतना कठिन कार्य है कि हम कह देते हैं कि यह असंभव है। मेरा यह कहना है कि जब आप बिना किसी प्रतिक्रिया के अपने अस्तित्व की संपूर्णता को देखते हैं, केवल तभी आपके पूर्व प्रभावों का, संस्कारबद्धता का विलय होता है--पूरी तरह और गहराई तक--और वास्तव में यही है अहं से मुक्ति।</p>
<p>-6-</p>	<p>- ६ -</p>

Ignorance Is Lack of Self-Knowledge	आत्म परिचय का अभाव ही अज्ञान है
Ignorance is lack of knowledge of the ways of the self, and this ignorance cannot be dissipated by superficial activities and reforms; it can be dissipated by one's constant awareness of the movements and responses of the self in all its relationships.	अपने अहं की गतिविधियों से अनभिज्ञ होना ही अज्ञान है। यह अज्ञान सतही कार्यकलापों और सुधारों से दूर नहीं किया जा सकता। इसे तो अहं के सभी संबंधों में उसकी गतिविधियों और प्रतिक्रियाओं के प्रति अनवरत सजगता द्वारा ही दूर किया जा सकता है।
What we must realize is that we are not only conditioned by environment, but that we are the environment—we are not something apart from it. Our thoughts and responses are conditioned by the values which society, of which we are a part, has imposed upon us.	यह बात समझ लेने की है कि हम अपने परिवेश द्वारा न केवल संस्कारबद्ध किये जाते हैं अपितु हम ही परिवेश हैं--हम इससे पृथक कुछ और चीज़ नहीं हैं। जिस समाज के हम अंश हैं उस समाज द्वारा हम पर थोपे गये मूल्यों से हमारे विचार और हमारे प्रत्युत्तर प्रभावित होते हैं।
— 7 —	- ७ -
Our Human Brain Took a Wrong Turn, Seeing Separation between the Self and the Not-Self	स्व और अन्य के बीच विभाजन को देखकर हमारे मन-मस्तिष्क ने एक गलत मोड़ ले लिया
We never see that we are the total environment because there are several entities in us, all revolving around the 'me', the self. The self is made up of these entities, which are merely desires in various forms. From this conglomeration of desires arises the central figure, the thinker, the will of the 'me' and the 'mine'; and a division is thus established between the self and the not-self, between the 'me' and the environment or society. This separation is the beginning of conflict, inward and outward.	स्वयं में विद्यमान उन विभिन्न स्वरूपों, अनगिनत वजूदों के चलते, जो 'मैं' के, इस अहं के, इस स्व के चारों ओर मंडराते रहते हैं, हम कभी यह देख ही नहीं पाते कि यह सारा वातावरण हम ही तो हैं। यह अहं इन्हीं स्वरूपों से बना है और ये विभिन्न स्वरूप हमारी इच्छाएं ही हैं। इच्छाओं के इस गुच्छे से ही केंद्रीभूत रूपाकृति का, इस विचारकर्ता का, 'मैं' और 'मेरे' की एषणा का उद्गम होता है और इस प्रकार अहं और दूसरे के बीच, 'मैं' और परिवेश अथवा समाज के बीच एक विभाजन खड़ा हो जाता है। यह पृथकता ही द्वंद का प्रथम चरण है--आंतरिक द्वंद का भी और बाह्य द्वंद का भी।
Awareness of this whole process, both the conscious and the hidden, is meditation; and through this meditation the self, with its desires and conflicts, is transcended. Self-knowledge is necessary if one is to be free of the influences and values that give shelter to the self; and in	सचेतन और अवचेतन दोनों की संपूर्ण प्रक्रिया के प्रति सजग रहना--यही ध्यान है, और इसी ध्यान के माध्यम से अहं और उसकी इच्छाओं व द्वंदों से ऊपर उठना हो पाता है। अहं को शरण देने वाले प्रभावों और मान्यताओं से यदि कोई मुक्त होना चाहता है तो स्वबोध, स्वयं

<p>this freedom alone in their creation, truth, God, or what you will.</p>	<p>को जानना अत्यावश्यक है, और इस मुक्ति में ही आता है सर्जन, सत्य, ईश्वर या आप उसे जो भी नाम दें।</p>
<p>Opinion and tradition mold our thoughts and feelings from the tenderest age. The immediate influences and impressions produce an effect which is powerful and lasting, and which shapes the whole course of our conscious and unconscious life. Conformity begins in childhood through education and the impact of society.</p>	<p>सुकुमल आयु से ही परंपरा और दूसरों के मत-अभिमत हमारे विचारों और भावनाओं को ढालते रहते हैं। उनके तात्कालिक प्रभाव और उनके संस्कार बहुत सशक्त और दीर्घकालीन होते हैं और ये ही हमारे सचेतन और अचेतन जीवन का दिशा-निर्देशन करते हैं। शिक्षा व समाज के प्रभाव द्वारा अनुसरण बचपन से ही शुरू हो जाता है।</p>
<p>The desire to imitate is a very strong factor in our life, not only at the superficial levels, but also profoundly. We have hardly any independent thoughts and feelings. When they do occur, they are mere reactions, and are therefore not free from the established pattern; for there is no freedom in reaction...</p>	<p>अनुकरण की इच्छा हमारे जीवन में सतही स्तर पर ही नहीं बल्कि गहराई तक भी एक प्रबल कारक बनी रहती है। हमारे अंदर शायद ही कोई स्वतंत्र विचार या भाव रहता हो। यदि कभी कोई आता भी है तो वह प्रतिक्रिया मात्र होता है, और इसीलिए वह स्थापित प्रतिमान से मुक्त नहीं हो पाता क्योंकि प्रतिक्रिया में कभी स्वतंत्रता नहीं होती ...</p>
<p>When we are inwardly dependent, then tradition has a great "hold on us, and a mind that thinks along traditional lines cannot discover that which is new. By conforming we become mediocre imitators, cogs in a cruel social machine. It is what we think that matters, not what others want us to think. When we conform to tradition, we soon become mere copies of what we should be.</p>	<p>जब हम आंतरिक रूप से आत्म-निर्भर नहीं रहते तब परंपराएं हम पर अत्यधिक हावी रहती हैं, और परंपरागत लीक पर चलने वाला कभी कुछ नया नहीं सीख सकता। अंधानुकरण करते-करते हम एक घटिया दर्जे के नकलची या एक क्रूर सामाजिक यंत्र-चक्र का दांता मात्र रह जाते हैं। जो हम सोचते हैं वह महत्वपूर्ण है, न कि वह जो दूसरे हमसे सोचवाना चाहते हैं। जब हम परंपराओं का अनुसरण करते हैं तब हम शीघ्र ही उनकी अपेक्षाओं के अनुरूप बन जाते हैं।</p>
<p>This imitation of what we should be, breeds fear; and fear kills creative thinking. Fear dulls the mind and heart so that we are not alert to the whole significance of life; we become insensitive to our own sorrows, to the movement of the birds, to the smiles and miseries of others.</p>	<p>उनकी अपेक्षाओं का यह अनुसरण भय को जन्म देता है और भय रचनात्मक विचारणा का गला घोट देता है। भय मन-मस्तिष्क को कुंद कर देता है जिससे हम जीवन के समग्र महत्व के प्रति सचेत नहीं रह पाते। हम अपने दुखों के प्रति, पक्षियों की गतिविधियों के प्रति, दूसरों के दुख और मुस्कान के प्रति असंवेदनशील हो जाते हैं।</p>
<p>-8-</p>	<p>- ८ -</p>

Knowledge, Wisdom, Intelligence	ज्ञान, समझ और प्रज्ञा
Knowledge is not comparable with intelligence, knowledge is not wisdom. Wisdom is not marketable, it is not a merchandise that can be bought with the price of learning or discipline. Wisdom cannot be found in books; it cannot be accumulated, memorized or stored up. Wisdom comes with the abnegation of the self. To have an open mind is more important than learning; and we can have an open mind, not by cramming it full of information, but by being aware of our own thoughts and feelings, by carefully observing ourselves and the influences about us, by listening to others, by watching the rich and the poor, the powerful and the lowly. Wisdom does not come through fear and oppression, but through the observation and understanding of everyday incidents in human relationship...	ज्ञान की तुलना प्रज्ञा से नहीं की जा सकती। जानकारी समझ, सूझ-बूझ नहीं है। समझ विक्रय की चीज़ नहीं होती। यह कोई ऐसी खरीद-फरोख्त की वस्तु नहीं है जो सीखने या अनुशासन के विनिमय से खरीदी जा सके। समझ, बुद्धिमत्ता ग्रंथों में नहीं ढूँढ़ी जा सकती। न तो इसका संचय किया जा सकता है, न इसे रटा जा सकता है और न ही इसका भंडारण किया जा सकता है। इसका आगमन तो अहं के, स्व के निषेध से होता है। ज्ञान प्राप्त करने की अपेक्षा अपने पास एक मुक्त मन का होना अधिक महत्वपूर्ण होता है। तमाम जानकारियों को अपने में भर लेने से हमें मुक्त मन नहीं मिल सकता। वह तो अपने ही विचारों और भावों के प्रति सजग रहने से, स्वयं का और स्वयं पर पड़ रहे प्रभावों का सावधानीपूर्वक अवलोकन करने से, दूसरों को सुनने से, धनवान और निर्धन को, सशक्त व अशक्त को ध्यानपूर्वक देखने से मिलता है। समझ भय अथवा दमन से नहीं आती बल्कि मानवीय संबंधों में दिन-प्रतिदिन की घटनाओं का सचेत अवलोकन करने और उनके बोध से आती है
Intelligence is much greater than intellect, for it is the integration of reason and love; but there can be intelligence only when there is self-knowledge, the deep understanding of the total process of oneself..We must be aware of our conditioning and its responses, both collective and personal. It is only when one is fully aware of the activities of the self with its contradictory desires and pursuits, its hopes and fears, that there is a possibility of going beyond the self.	प्रज्ञा बौद्धिकता से कहीं अधिक विराट होती है क्योंकि इसमें विवेक और प्रेम का समन्वय रहता है। परंतु प्रज्ञा आती तभी है जब हमें स्वबोध हो, अपने भीतर की तमाम गतिविधियों की गहरी समझ हो... यह निहायत ज़रूरी है कि हम अपने व्यक्तिगत और समूहगत पूर्वप्रभावों और उनकी प्रतिक्रियाओं से पूर्ण परिचित हों। कोई स्व से केवल तभी पार जा सकता है जब वह इसकी गतिविधियों के प्रति, इसकी विरोधाभासी इच्छाओं और भाग-दौड़, इसकी अपेक्षाओं और भय के प्रति पूरी तरह सजग हो।
Only love and right thinking will bring about true revolution, the revolution within ourselves.	केवल प्रेम और सम्यक विचारणा ही हममें वास्तविक क्रांति, आंतरिक क्रांति ला सकते हैं।
CHAPTER FIVE	अध्याय पाँच
Escape; Entertainment; Pleasure	पलायन, मनोरंजन, विलास